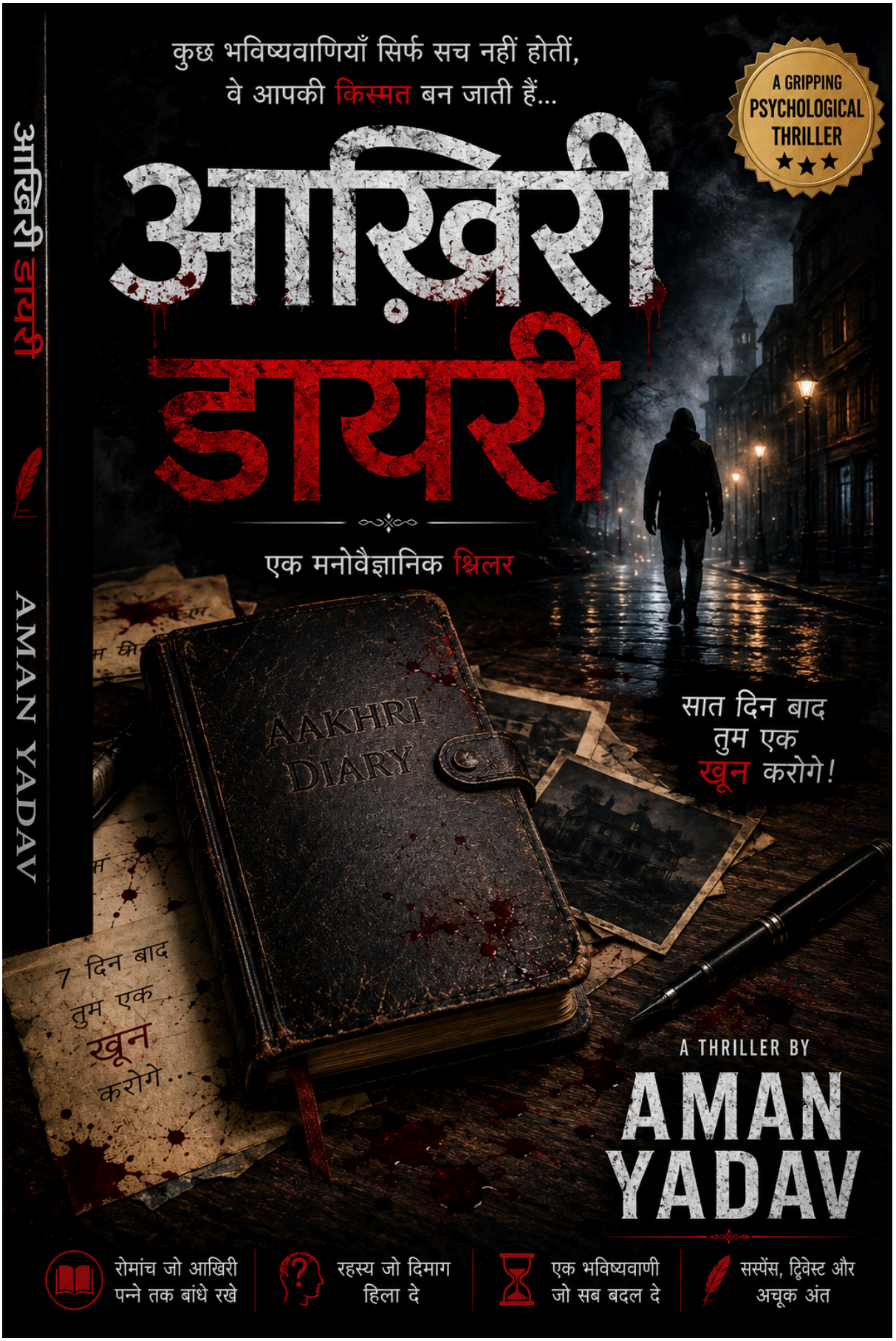
आख़िरी डायरी
AMAN YADAV
कुछ भविष्यवाणियाँ सिर्फ सच नहीं होतीं,
वे आपकी किस्मत बन जाती हैं...
A GRIPPING PSYCHOLOGICAL THRILLER
आख़िरी
डायरी
एक मनोवैज्ञानिक थ्रिलर
AAKHRI DIARY
7 दिन बाद तुम एक खून करोगे...
सात दिन बाद तुम एक खून करोगे!
A THRILLER BY
AMAN YADAV
रोमांच जो आखिरी पन्ने तक बांधे रखे
रहस्य जो दिमाग हिला दे
एक भविष्यवाणी जो सब बदल दे
सस्पेंस, ट्विस्ट और अचूक अंत

आख़िरी डायरी

Copyright © 2026 Aman Yadav

सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस पुस्तक का कोई भी भाग लेखक की लिखित अनुमति के बिना
किसी भी रूप में प्रकाशित, कॉपी या वितरित नहीं किया जा सकता।

First Edition: 2026

लेखक:
Aman Yadav

---

प्रिय पाठकों,

आख़िरी डायरी सिर्फ़ एक डरावनी कहानी नहीं है।
यह इंसान के लालच, डर और फैसलों की कहानी है।

अगर इस कहानी ने आपको अंत तक बाँधे रखा,
तो मेरी मेहनत सफल हुई।

धन्यवाद।

— अमन यादव

अध्याय 1 — वह डायरी

अध्याय 2 — पहली लाश

अध्याय 3 — अनजान कॉल

अध्याय 4 — दरवाज़े के उस पार

अध्याय 5 — पुरानी तस्वीर का राज़

अध्याय 6 — बंद कमरा

अध्याय 7 — रामगढ़ का आख़िरी आदमी

अध्याय 8 — पच्चीस साल पुराना सच

अध्याय 9 — छठी डायरी

अध्याय 10 — आख़िरी शिकार

अध्याय 11 — पिता का आख़िरी सच

अध्याय 12 — अंतिम नियम

अध्याय 13 — आख़िरी सच

# आख़िरी डायरी

## अध्याय 1 — वह डायरी

लगातार तीसरे दिन बारिश हो रही थी। रात के साढ़े दस बज चुके थे। बिजली की चमक हर कुछ मिनट बाद पूरे आसमान को चीर देती और उसके बाद चारों ओर ऐसा अंधेरा छा जाता मानो रोशनी कभी थी ही नहीं। पुराने पुश्तैनी घर की दीवारों से नमी की गंध उठ रही थी। यह वही घर था जहाँ आरव वर्मा ने अपना बचपन बिताया था, लेकिन आज वह घर उसे अपना नहीं लग रहा था।

पिता की मृत्यु को छह महीने बीत चुके थे। घर बेचने से पहले उसने तय किया था कि स्टोर रूम में रखी हर पुरानी चीज़ एक बार देख ले। लकड़ी के बक्से, जंग लगे औज़ार, पुराने फोटो एलबम और धूल से ढकी किताबें—हर सामान किसी भूली हुई याद की तरह चुपचाप पड़ा था।

स्टोर रूम के कोने में रखी एक टूटी हुई अलमारी ने उसका ध्यान खींचा। ऊपर की शेल्फ पर धूल से ढका एक छोटा-सा काला डिब्बा रखा था। वह कुर्सी पर चढ़ा, मुश्किल से डिब्बा नीचे उतारा और धीरे-से उसका ढक्कन खोला।

अंदर एक चमड़े की पुरानी डायरी रखी थी।

डायरी का कवर गहरे काले रंग का था। चमड़ा कई जगह से फट चुका था, लेकिन बीच में उभरे सुनहरे अक्षर अब भी साफ दिखाई दे रहे थे—

**"आख़िरी डायरी"**

आरव हल्का-सा मुस्कुराया। "किसी लेखक की अधूरी कहानी होगी," उसने खुद से कहा और पहला पन्ना खोला।

सिर्फ एक वाक्य लिखा था—

**"जो इस डायरी को पढ़ता है, वह अपना भविष्य बदलना चाहता है... लेकिन अंत में वही भविष्य उसे बदल देता है।"**

वाक्य पढ़ते ही कमरे का बल्ब दो बार टिमटिमाया। उसने सिर उठाकर छत की ओर देखा। "पुरानी वायरिंग होगी," वह बुदबुदाया और दूसरा पन्ना पलट दिया।

ऊपर आज की तारीख लिखी थी—**15** जुलाई।

आरव की भौंहें सिकुड़ गईं। आज भी पंद्रह जुलाई ही थी।

नीचे साफ़ अक्षरों में लिखा था—

रात **11:17** बजे बिजली चली जाएगी।

**11:21** बजे तुम्हारा फोन बजेगा।

फोन राहुल का होगा।

वह सिर्फ एक बात कहेगा—"कल ऑफिस मत आना।"

आरव हँस पड़ा। उसे लगा किसी ने मज़ाक में यह सब लिखा होगा। उसने डायरी बंद की, उसे मेज़ पर रखा और नीचे हॉल में आ गया। टीवी चलाकर वह सोफे पर बैठ गया। बाहर बारिश अब भी बिना रुके बरस रही थी।

दीवार पर लगी घड़ी की सुइयाँ धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थीं।

11:16...

11:17...

अचानक पूरा घर अंधेरे में डूब गया।

बिजली चली गई थी।

आरव कुछ पल तक वहीं बैठा रहा। फिर उसने मोबाइल की टॉर्च जलाई और खुद को समझाया कि यह सिर्फ संयोग है। बारिश के मौसम में बिजली जाना कोई बड़ी बात नहीं।

उसने मोबाइल की स्क्रीन पर समय देखा।

11:20...

एक मिनट बाद फोन की घंटी पूरे कमरे में गूँज उठी।

स्क्रीन पर नाम चमक रहा था—

राहुल

आरव के हाथ अनायास काँप उठे। उसने धीरे-से कॉल रिसीव की।

"हेलो?"

दूसरी तरफ़ से घबराई हुई आवाज़ आई, "आरव, कल ऑफिस मत आना। अभी-अभी खबर मिली है कि सुबह कंपनी में इनकम टैक्स की रेड पड़ने वाली है। किसी को मत बताना।"

इतना कहकर राहुल ने फोन काट दिया।

कमरे में फिर वही सन्नाटा लौट आया। इस बार बारिश की आवाज़ भी पहले से ज़्यादा डरावनी लग रही थी।

आरव की नज़र धीरे-धीरे मेज़ पर रखी डायरी की ओर गई। उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा। वह लगभग दौड़ता हुआ स्टोर रूम पहुँचा और काँपते हाथों से डायरी दोबारा खोली।

अगले पन्ने पर ऊपर **16** जुलाई लिखा था।

उसके नीचे सिर्फ एक पंक्ति थी—

"कल सुबह ठीक **8:30** बजे तुम्हें एक लाश मिलेगी।"

आरव का गला सूख गया। उसने कई बार उस पंक्ति को पढ़ा, मानो शब्द बदल जाएँगे। लेकिन हर बार वही लिखा दिखाई दिया।

"नहीं... ऐसा नहीं हो सकता," उसने खुद से कहा और डायरी बंद कर दी।

उसी क्षण तेज़ हवा का झोंका आया। स्टोर रूम की खिड़की अपने-आप खुल गई। ठंडी हवा पूरे कमरे में फैल गई और मेज़ पर रखी डायरी के पन्ने अपने-आप तेजी से पलटने लगे।

आख़िरी खुलने वाले पन्ने पर लाल स्याही से सिर्फ तीन शब्द लिखे थे—

**"देर हो चुकी।"**

आरव कुछ सेकंड तक वहीं खड़ा रह गया। उसे पहली बार महसूस हुआ कि शायद उसने कोई पुरानी डायरी नहीं, बल्कि अपनी ज़िंदगी का सबसे बड़ा अभिशाप खोल दिया है।

# अध्याय 2 — पहली लाश

आरव पूरी रात नहीं सो पाया। स्टोर रूम से डायरी उठाकर वह अपने कमरे में ले आया था। मेज़ पर रखी उस काली डायरी पर उसकी नज़र बार-बार चली जाती। वह खुद को समझाने की कोशिश करता कि यह सब महज़ संयोग है, लेकिन उसके भीतर बैठा डर हर तर्क को धीरे-धीरे खत्म कर रहा था।

रात के लगभग दो बजे उसने फिर डायरी खोली। उसने सोचा शायद सुबह वाली भविष्यवाणी के बाद कुछ और लिखा हो। उसने एक-एक पन्ना पलटा, लेकिन हर पन्ना खाली था। सिर्फ वही एक वाक्य दिखाई दे रहा था—

**"**कल सुबह ठीक **8:30** बजे तुम्हें एक लाश मिलेगी।**"**

उसने झुंझलाकर डायरी बंद कर दी। "अगर मैं घर से बाहर ही नहीं निकलूँगा तो लाश कैसे मिलेगी?" उसने खुद से कहा। यह सोचकर वह बिस्तर पर लेट गया, लेकिन नींद उसकी आँखों से कोसों दूर थी।

सुबह सात बजे उसकी आँख खुली। बाहर बारिश रुक चुकी थी। बादलों के बीच से हल्की धूप निकलने की कोशिश कर रही थी। उसने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और बिना नाश्ता किए घर से निकल गया। उसका फैसला साफ था—आज वह किसी सुनसान जगह पर नहीं जाएगा, किसी अनजान रास्ते पर नहीं जाएगा और आठ बजकर तीस मिनट तक भीड़ के बीच रहेगा।

उसने कार शहर के सबसे व्यस्त इलाके की ओर मोड़ दी। सड़कें धीरे-धीरे लोगों से भरने लगी थीं। स्कूल की बसें, ऑफिस जाने वाले लोग, चाय की दुकानों पर खड़े ग्राहक—हर तरफ़ सामान्य जीवन चल रहा था। यह सब देखकर उसका डर थोड़ा कम हुआ।

आठ बजकर पंद्रह मिनट पर उसने एक छोटे से कैफ़े के बाहर कार रोक दी। उसने कॉफी मंगाई और जानबूझकर खिड़की के पास बैठ गया ताकि समय बीतता रहे। उसकी नज़र हर कुछ सेकंड बाद घड़ी पर चली जाती।

**8:22...**

**8:25...**

"देखा... कुछ नहीं होगा," उसने मन ही मन कहा।

तभी उसका मोबाइल बजा।

राहुल का फोन था।

"हेलो?"

"यार, तू ठीक है? कल रात से तेरी आवाज़ अजीब लग रही थी।"

"हाँ... बस नींद नहीं हुई।"

"ऑफिस मत आना। सच में रेड पड़ी है। पूरा स्टाफ बाहर खड़ा है।"

आरव ने बिना कुछ कहे कॉल काट दिया। उसकी नज़र फिर घड़ी पर गई।

**8:29**

उसी समय कैफ़े के बाहर अचानक ज़ोरदार ब्रेक लगने की आवाज़ आई।

धड़ाम!

लोग अपनी सीटों से उठकर बाहर भागे।

आरव भी भीड़ के पीछे-पीछे बाहर निकला।

एक मोटरसाइकिल सड़क किनारे फिसल गई थी। कुछ लोग घायल युवक को उठाने की कोशिश कर रहे थे। आरव ने राहत की साँस ली।

"यही होगा..." उसने सोचा, "डायरी ने शायद इसी हादसे की बात की होगी।"

लेकिन तभी भीड़ में से किसी ने चिल्लाकर कहा—

"अरे... उधर देखो!"

सड़क से कुछ दूरी पर झाड़ियों के बीच एक आदमी पड़ा था।

पहले किसी ने ध्यान नहीं दिया था।

भीड़ धीरे-धीरे उस तरफ़ बढ़ने लगी।

आरव भी अनजाने में लोगों के साथ चल पड़ा।

झाड़ियों के पास पहुँचते ही उसकी चाल धीमी हो गई।

ज़मीन पर एक युवक औंधे मुँह पड़ा था। उसकी शर्ट खून से भीग चुकी थी। आसपास की मिट्टी लाल हो गई थी। हवा में लोहे जैसी तेज़ गंध फैल गई।

भीड़ में सन्नाटा छा गया।

एक आदमी ने काँपते हाथ से युवक को पलटने की कोशिश की, लेकिन जैसे ही चेहरा दिखाई दिया, वह डरकर पीछे हट गया।

युवक की आँखें पूरी तरह खुली हुई थीं। चेहरे पर ऐसा भय था मानो उसने मरने से पहले किसी ऐसी चीज़ को देखा हो जिस पर यकीन करना असंभव था।

आरव की नज़र अपनी घड़ी पर गई।

**8:30**

उसका शरीर सुन्न पड़ गया।

डायरी ने एक भी मिनट की गलती नहीं की थी।

उसी समय उसकी नज़र शव के पास पड़ी एक चमकती हुई चीज़ पर गई।

वह एक पुरानी काली डायरी थी।

बिल्कुल वैसी...

जैसी उसके घर में रखी थी।

उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा।

भीड़ का ध्यान अभी भी शव पर था। किसी ने डायरी की तरफ़ नहीं देखा।

आरव धीरे-धीरे आगे बढ़ा। उसने इधर-उधर देखा। किसी की नज़र उस पर नहीं थी।

उसने झुककर डायरी उठा ली और तुरंत अपनी जैकेट के अंदर छिपा ली।

उसकी उँगलियों पर सूखा हुआ खून लग गया।

वह पीछे हट ही रहा था कि दूर से पुलिस सायरन की आवाज़ सुनाई दी।

कुछ ही मिनटों में पुलिस की दो गाड़ियाँ वहाँ पहुँच गईं।

लोगों को पीछे हटाया गया।

एक लंबे कद का अधिकारी घटनास्थल पर उतरा। उसके चेहरे पर कठोरता साफ दिखाई दे रही थी। उसकी वर्दी पर नेम प्लेट लगी थी—

इंस्पेक्टर विक्रम सिंह।

उसने एक नज़र शव पर डाली, फिर आसपास खड़े लोगों की ओर देखा।

"सब लोग यहीं रहेंगे। कोई भी बिना पूछताछ के नहीं जाएगा।"

एक-एक करके लोगों से सवाल पूछे जाने लगे।

जब आरव की बारी आई तो इंस्पेक्टर ने उसे ध्यान से देखा।

"नाम?"

"आरव... आरव वर्मा।"

"तुम यहाँ क्या कर रहे थे?"

"कॉफी पीने आया था। आवाज़ सुनी तो बाहर निकल आया।"

"शव को सबसे पहले किसने देखा?"

भीड़ में खड़े एक दुकानदार ने कहा, "साहब, शायद यही लड़का सबसे आगे पहुँचा था।"

इंस्पेक्टर की नज़र फिर आरव पर टिक गई।

"तुमने शव को छुआ?"

"नहीं।"

"कुछ उठाया?"

यह सवाल सुनते ही आरव के गले में जैसे काँटा अटक गया।

उसने पूरी कोशिश की कि उसके चेहरे पर कोई भाव न आए।

"नहीं।"

इंस्पेक्टर कुछ सेकंड तक उसे घूरता रहा। फिर उसने कुछ लिखकर अपनी डायरी बंद कर दी।

उसी समय एक कांस्टेबल भागता हुआ आया।

"सर, मृतक की जेब से ये मिला है।"

उसने एक मुड़ा हुआ कागज़ इंस्पेक्टर को दिया।

विक्रम ने कागज़ खोला।

कुछ पढ़ते ही उसके चेहरे का भाव बदल गया।

उसने धीरे-धीरे सिर उठाया और सीधे आरव की आँखों में देखा।

"मिस्टर आरव..."

"जी?"

"क्या आप इस आदमी को पहले से जानते थे?"

"नहीं।"

इंस्पेक्टर ने बिना कुछ कहे वह कागज़ उसकी ओर बढ़ा दिया।

आरव के हाथ काँप उठे।

कागज़ पर लाल स्याही से सिर्फ एक नाम लिखा था—

आरव वर्मा।

उसके नीचे एक और पंक्ति थी—

**"यह तो सिर्फ शुरुआत है।"**

आरव के कानों में आसपास की सारी आवाज़ें जैसे गायब हो गईं। उसे सिर्फ अपनी धड़कन सुनाई दे रही थी।

उसने धीरे-से अपनी जैकेट के भीतर छिपी डायरी को छुआ।

उसे पहली बार एहसास हुआ कि वह किसी साधारण हत्या का गवाह नहीं बना था।

कोई उसे जानता था।

कोई उसकी हर हरकत पर नज़र रख रहा था।

और शायद...

उसने डायरी नहीं खोजी थी।

डायरी ने उसे चुना था।

# अध्याय 3 — अनजान कॉल

पुलिस स्टेशन से निकलते समय आरव के कदम भारी हो चुके थे। इंस्पेक्टर विक्रम ने उसका मोबाइल नंबर, पता और ऑफिस की पूरी जानकारी दर्ज कर ली थी। जाते-जाते उसने सिर्फ एक बात कही थी—"शहर छोड़ने की कोशिश मत करना। जब तक यह केस खत्म नहीं होता, तुम हमारी निगरानी में हो।"

आरव ने कोई जवाब नहीं दिया। उसके दिमाग में सिर्फ एक सवाल घूम रहा था—मृत आदमी की जेब में उसका नाम कैसे पहुँचा?

घर लौटते समय उसने कई बार रियर-व्यू मिरर में देखा। उसे बार-बार ऐसा लगा जैसे एक काली एसयूवी उसकी कार का पीछा कर रही हो। जब भी वह लेन बदलता, वह गाड़ी भी लेन बदल देती। उसने अचानक एक पेट्रोल पंप पर कार रोक दी। पीछे देखा।

सड़क खाली थी।

वहाँ कोई एसयूवी नहीं थी।

"मैं वहम का शिकार हो रहा हूँ..." उसने खुद से कहा, लेकिन उसके हाथ अब भी काँप रहे थे।

घर पहुँचते ही उसने मुख्य दरवाज़ा बंद किया और सीधे अपने कमरे में चला गया। उसने जैकेट के भीतर छिपी दूसरी डायरी बाहर निकाली। अब मेज़ पर दो बिल्कुल एक जैसी काली डायरियाँ रखी थीं। एक उसे स्टोर रूम में मिली थी, दूसरी हत्या की जगह से।

दोनों के कवर पर एक ही नाम उभरा हुआ था—

**"आख़िरी डायरी"**

आरव ने दूसरी डायरी खोली।

पहले पन्ने पर सिर्फ एक वाक्य लिखा था—

**"**अगर यह डायरी तुम्हारे हाथ में है, तो पहला नियम टूट चुका है।**"**

"पहला नियम?" उसने धीरे से दोहराया। "कौन-सा नियम?"

उसने जल्दी-जल्दी बाकी पन्ने पलटे। लगभग सभी खाली थे। आख़िरी पन्ने पर पहुँचते ही उसका दिल धड़कना भूल गया।

लाल स्याही से लिखा था—

**"**आज रात **12** बजे कोई तुम्हारे दरवाज़े पर दस्तक देगा। दरवाज़ा मत खोलना।**"**

आरव ने घड़ी देखी।

शाम के सिर्फ पाँच बजे थे।

उसने तय किया कि इस बार वह डायरी की बात नहीं मानेगा। अगर कोई आएगा तो वह दरवाज़ा ज़रूर खोलेगा। उसे जानना था कि यह खेल कौन खेल रहा है।

शाम धीरे-धीरे रात में बदल गई। बाहर फिर बारिश शुरू हो गई। हवा इतनी तेज़ थी कि खिड़कियों के शीशे काँप रहे थे। घर के हर कमरे में अजीब-सा सन्नाटा पसरा था।

रात के ग्यारह बजकर पचपन मिनट हुए।

आरव सोफे पर बैठा दरवाज़े को देख रहा था।

ग्यारह बजकर उनसठ मिनट।

फिर...

ठक**...** ठक**...** ठक**...**

मुख्य दरवाज़े पर तीन धीमी दस्तक हुई।

आरव की साँस रुक गई।

कुछ सेकंड तक फिर सन्नाटा छा गया।

उसने धीरे से दरवाज़े की ओर कदम बढ़ाए। उसकी उँगलियाँ हैंडल तक पहुँची ही थीं कि अचानक उसका मोबाइल बज उठा।

स्क्रीन पर कोई नंबर नहीं था।

सिर्फ लिखा था—

**Unknown Caller**

उसने कॉल रिसीव की।

दूसरी तरफ़ से एक भारी, धीमी आवाज़ सुनाई दी।

"अगर ज़िंदा रहना चाहते हो..."

कुछ पल की खामोशी के बाद वही आवाज़ फिर बोली—

"...तो दरवाज़ा मत खोलना।"

कॉल तुरंत कट गया।

उसी क्षण दरवाज़े पर पहले से भी ज़्यादा ज़ोर की दस्तक हुई।

**धड़... धड़... धड़...**

लेकिन इस बार दस्तक के साथ एक आदमी की आवाज़ भी आई—

"आरव! दरवाज़ा खोलो!"

वह आवाज़...

उसके दिवंगत पिता की थी।

# अध्याय 4 — दरवाज़े के उस पार

आरव का हाथ मुख्य दरवाज़े के हैंडल पर ठिठक गया। मोबाइल की स्क्रीन पर **Unknown Caller** की कॉल कट चुकी थी, लेकिन उसके आख़िरी शब्द अब भी उसके कानों में गूँज रहे थे—"अगर ज़िंदा रहना चाहते हो... तो दरवाज़ा मत खोलना।" ठीक उसी क्षण फिर तीन ज़ोरदार दस्तक हुई। आवाज़ इतनी साफ़ थी कि ऐसा लगा मानो दरवाज़े के दूसरी तरफ़ खड़ा व्यक्ति अब धैर्य खो चुका हो। इसके बाद जो आवाज़ सुनाई दी, उसने आरव की रगों में बहता खून जमा दिया। "आरव... बेटा... दरवाज़ा खोलो।" यह उसके पिता की आवाज़ थी। वही लहजा, वही ठहराव और वही अपनापन, जिसे वह बचपन से सुनता आया था। एक पल के लिए उसका मन दरवाज़ा खोल देने का हुआ, लेकिन अगले ही पल उसे अपने पिता का अंतिम संस्कार याद आ गया। उसने अपनी आँखों से उनकी चिता को जलते देखा था। जो व्यक्ति छह महीने पहले मर चुका था, वह आधी रात को उसके दरवाज़े पर कैसे खड़ा हो सकता था?

उसने काँपते हाथों से झिर्री में आँख लगाई। बाहर लगातार बारिश हो रही थी। बरामदे की सीढ़ियों पर पानी बह रहा था और स्ट्रीट लाइट की पीली रोशनी बारिश की चादर में धुँधली पड़ चुकी थी। वहाँ कोई नहीं था। पूरा बरामदा खाली था। उसने एक बार फिर ध्यान से देखा। दरवाज़े के सामने रखा पुराना गमला, लोहे की रेलिंग और भीगा हुआ आँगन—सब कुछ अपनी जगह था, लेकिन इंसान का नामोनिशान नहीं था। वह पीछे हट ही रहा था कि वही आवाज़ दोबारा सुनाई दी—"बेटा... मुझे अंदर आने दो..." इस बार आवाज़ बाहर से नहीं, बल्कि उसके दाहिने कान के बिल्कुल पास से आई। आरव घबराकर पलटा। उसके पीछे सिर्फ़ अंधेरा था।

उसकी धड़कनें तेज़ हो चुकी थीं। उसने पूरे ड्रॉइंग रूम पर नज़र दौड़ाई। सब कुछ सामान्य दिख रहा था, लेकिन भीतर एक अजीब बेचैनी फैल चुकी थी। तभी रसोई की दिशा से किसी धातु के गिरने की तेज़ आवाज़ आई। वह दौड़कर वहाँ पहुँचा। फ़र्श पर स्टील का एक गिलास लुढ़क रहा था। खिड़की आधी खुली थी और तेज़ हवा पर्दों को उड़ा रही थीं। उसने खिड़की बंद की, लेकिन उसके मन में सवाल था कि गिलास रैक के बीच से अपने आप नीचे कैसे गिर गया। जैसे ही वह वापस ड्रॉइंग रूम में लौटा, उसके कदम वहीं रुक गए। कुछ मिनट पहले तक मेज़ पर रखी दोनों काली डायरियाँ गायब थीं।

उसने पूरे कमरे में घबराकर ढूँढना शुरू कर दिया। सोफ़े के नीचे, किताबों की अलमारी के पीछे, यहाँ तक कि परदों के बीच भी देखा, लेकिन डायरियाँ कहीं नहीं थीं। तभी उसकी नज़र खिड़की के पास गई। दोनों डायरियाँ फ़र्श पर एक-दूसरे के ऊपर रखी थीं, मानो किसी ने उन्हें अभी-अभी वहाँ रखा हो। आरव ने झट से पहली डायरी

उठाई। उसके पन्ने अपने-आप खुल गए। जिस पन्ने पर पहले कुछ भी नहीं लिखा था, वहाँ अब लाल स्याही में नए शब्द उभर आए थे—

**"नियम 2 — जो मृतकों की आवाज़ पर विश्वास करेगा, वह जीवितों को खो देगा।"**

आरव का गला सूख गया। उसने तुरंत दूसरी डायरी खोली। उसमें केवल एक पंक्ति लिखी थी—

**"आज रात तुम्हारा इम्तिहान है।"**

उसने दोनों डायरियाँ बंद कीं और उन्हें मेज़ के नीचे बनी छुपी हुई जगह में छिपा दिया, जिसके बारे में उसके पिता के अलावा कोई नहीं जानता था। वह अभी सीधा खड़ा ही हुआ था कि पूरे घर की बिजली चली गई। अंधेरा इतना घना था कि उसे अपना हाथ भी दिखाई नहीं दे रहा था। उसने मोबाइल की टॉर्च जलाई। रोशनी सीढ़ियों तक पहुँची तो उसे ऊपर किसी के खड़े होने का भ्रम हुआ। सफ़ेद कपड़े पहने एक लंबी आकृति कुछ सेकंड तक बिल्कुल स्थिर रही और फिर जैसे धुएँ की तरह गायब हो गई। आरव ने खुद को समझाया कि शायद यह रोशनी और अंधेरे का खेल है, लेकिन उसका डर अब तर्क से कहीं आगे निकल चुका था।

उसी समय मुख्य दरवाज़े की घंटी लगातार बजने लगी। पहली बार उसे लगा कि शायद सचमुच कोई बाहर है। उसने सावधानी से दरवाज़ा खोला। इस बार बाहर इंस्पेक्टर विक्रम सिंह खड़ा था। उसके साथ दो पुलिसकर्मी भी थे। बारिश में भीगने के बावजूद उसके चेहरे पर वही कठोरता थी। उसने बिना भूमिका बाँधे पूछा, "पड़ोसियों ने शिकायत की है कि तुम्हारे घर से किसी के चिल्लाने की आवाज़ आई है। क्या सब ठीक है?"

आरव ने खुद को सामान्य दिखाने की कोशिश की। "हाँ... शायद टीवी की आवाज़ ज़्यादा थी," उसने झूठ बोला। विक्रम ने बिना कुछ कहे घर के अंदर कदम रख दिया। उसकी नज़र कमरे के हर कोने पर घूम रही थी, जैसे वह किसी ऐसी चीज़ की ढूँढ में हो जिसका नाम उसे भी नहीं पता। उसने रसोई देखी, स्टोर रूम देखा और ऊपर की मंज़िल तक गया। लौटते समय उसकी नज़र मेज़ के नीचे पड़े एक छोटे-से कागज़ पर पड़ी। उसने बिना कुछ कहे वह कागज़ उठाया और चुपचाप अपनी जेब में रख लिया। आरव उस समय दूसरी तरफ़ देख रहा था, इसलिए उसे इसका पता ही नहीं चले।

करीब पंद्रह मिनट बाद पुलिस चली गई। घर में फिर वही सन्नाटा लौट आया। आरव को सुकून मिला और सीधे मेज़ के पास पहुँचा। उसने छुपी हुई जगह खोली। दोनों डायरियाँ अब भी वहीं थीं। उसने उन्हें बाहर निकाला तो उनके बीच एक पुरानी काली-सफ़ेद तस्वीर रखी हुई थी। यह तस्वीर उसने पहले कभी नहीं देखी थी। तस्वीर में उसके पिता मुस्कुरा रहे थे। उनके साथ चार और आदमी खड़े थे। पाँचों के हाथों में बिल्कुल वैसी ही काली डायरियाँ थीं जैसी अब आरव के पास थीं। तस्वीर के पीछे किसी ने नीली स्याही से एक वाक्य लिखा था—

**"अगर पाँचवाँ लौट आया, तो खेल फिर शुरू होगा।"**

आरव ने तस्वीर को कई बार उलट-पलटकर देखा। तभी उसकी नज़र नीचे लिखी तारीख़ पर गई—

**17** अगस्त **2001**

उसने धीरे-धीरे सिर उठाया। आज की तारीख़ थी—

**17** अगस्त **2026**।

ठीक पच्चीस साल बाद... वही खेल फिर शुरू हो चुका था।

# अध्याय **5** — पुरानी तस्वीर का राज़

सुबह की पहली किरण खिड़की से कमरे में आई, लेकिन आरव की आँखों में नींद नहीं थी। पूरी रात उसने उस पुरानी तस्वीर को न जाने कितनी बार देखा था। तस्वीर में उसके पिता चार दूसरे लोगों के साथ खड़े थे। सबसे अजीब बात यह थी कि पाँचों के हाथ में एक जैसी काली डायरी थी। तस्वीर के पीछे लिखा था—"अगर पाँचवाँ लौट आया, तो खेल फिर शुरू होगा।"

आरव ने तस्वीर मेज़ पर रखी और अलमारी खोल दी। उसे याद आया कि उसके पिता हर ज़रूरी कागज़ एक लोहे के पुराने बक्से में रखते थे। उसने बक्सा बाहर निकाला। उसमें पुराने खत, ज़मीन के कागज़, कुछ फोटो और एक छोटी चाबी रखी थी। चाबी के साथ एक मुड़ा हुआ कागज़ भी था। उस पर सिर्फ़ एक पता लिखा था।

पुराना पुस्तकालय, शिव चौक।

आरव ने तुरंत तय किया कि वह वहीं जाएगा।

उधर, पुलिस स्टेशन में इंस्पेक्टर विक्रम पोस्टमार्टम रिपोर्ट पढ़ रहा था। रिपोर्ट में लिखा था कि मरा हुआ लड़का चाकू लगने से नहीं मरा था। उसकी मौत पहले ही हो चुकी थी। चाकू का वार बाद में किया गया था, ताकि मामला हत्या जैसा लगे।

विक्रम की भौंहें सिकुड़ गईं। उसने धीरे से कहा, "तो असली कहानी कुछ और है।"

उसी समय एक कांस्टेबल अंदर आया। "सर, मरने वाले लड़के की पहचान हो गई है। उसका नाम रोहित था।"

"घरवालों से बात हुई?"

"जी सर। उन्होंने बताया कि रोहित पिछले एक हफ्ते से बार-बार एक आदमी को ढूँढ़ रहा था।"

"कौन?"

कांस्टेबल ने फाइल आगे बढ़ा दी।

विक्रम ने नाम पढ़ा।

आरव वर्मा।

उसने तुरंत कुर्सी छोड़ी और कहा, "आरव पर नज़र रखो। वह कुछ छिपा रहा है।"

इधर आरव अपनी कार लेकर शिव चौक पहुँच चुका था। वहाँ एक बहुत पुरानी लाइब्रेरी थी। दीवारों का रंग उतर चुका था और लकड़ी का बोर्ड आधा टूट चुका था। अंदर सिर्फ़ एक बूढ़ा आदमी बैठा था। उसके सफ़ेद बाल और मोटा चश्मा देखकर लगता था कि वह कई सालों से वहीं काम कर रहा है।

आरव ने तस्वीर उसकी तरफ़ बढ़ाई।

"क्या आप इन लोगों को जानते हैं?"

बूढ़े ने तस्वीर हाथ में ली। जैसे ही उसकी नज़र तस्वीर पर पड़ी, उसका चेहरा बदल गया। उसके हाथ हल्के-हल्के काँपने लगे।

"यह तस्वीर... तुम्हें कहाँ मिली?"

"मेरे पापा के सामान में।"

बूढ़ा कुछ देर चुप रहा। फिर उसने धीरे से पूछा, "तुम... मोहन के बेटे हो?"

आरव हैरान रह गया।

"जी... लेकिन आप मेरे पापा को कैसे जानते हैं?"

बूढ़े ने गहरी साँस ली। "क्योंकि हम पाँचों दोस्त थे।"

आरव का दिल तेज़ धड़कने लगा।

"बाकी चार कहाँ हैं?"

बूढ़े ने खिड़की के बाहर देखा। उसकी आँखों में डर साफ़ दिखाई दे रहा था।

"चार नहीं... अब सिर्फ़ मैं बचा हूँ।"

"मतलब?"

"तेरे पापा समेत चारों मर चुके हैं।"

कमरे में कुछ पल के लिए चुप्पी छा गई।

आरव कुछ पूछ पाता, उससे पहले बूढ़ा आदमी जल्दी से उठा। उसने अलमारी खोली और अंदर से एक पुराना लिफ़ाफ़ा निकाला।

"यह तेरे पापा ने बीस साल पहले मेरे पास छोड़ा था। कहा था, अगर कभी उनका बेटा आए... तो उसे दे देना।"

आरव ने काँपते हाथों से लिफ़ाफ़ा लिया।

उसने धीरे-धीरे उसे खोला।

अंदर एक छोटा-सा कागज़ था।

उस पर सिर्फ़ एक लाइन लिखी थी—

**"डायरी कभी मत पढ़ना... अगर पढ़ ली है, तो किसी पर भरोसा मत करना।"**

आरव अभी वह लाइन पढ़ ही रहा था कि अचानक लाइब्रेरी की सारी लाइटें बंद हो गईं।

पूरा कमरा अंधेरे में डूब गया।

बाहर तेज़ हवा चलने लगी।

अंधेरे में किसी के चलने की आवाज़ आई।

**ठक... ठक... ठक...**

बूढ़ा आदमी डरकर चिल्लाया—

"वो आ गया...!"

अगले ही पल एक ज़ोरदार चीख पूरे पुस्तकालय में गूँज उठी।

# अध्याय 6 — बंद कमरा

चीख सुनते ही आरव का दिल ज़ोर से धड़कने लगा। पूरा पुस्तकालय अंधेरे में डूबा हुआ था। बाहर तेज़ हवा चल रही थी और खिड़कियाँ बार-बार टकरा रही थीं। उसने जल्दी से मोबाइल की टॉर्च जलाई। हल्की सफ़ेद रोशनी कमरे में फैली। बूढ़ा आदमी अभी कुछ सेकंड पहले उसके सामने खड़ा था, लेकिन अब वहाँ कोई नहीं था।

"बाबा... आप कहाँ हैं?" आरव ने डरते हुए आवाज़ लगाई।

कोई जवाब नहीं मिला।

वह धीरे-धीरे अंदर की तरफ़ बढ़ा। लकड़ी की पुरानी अलमारियों के बीच एक पतला रास्ता था। हर कदम पर फ़र्श चरमराता था। तभी उसे ज़मीन पर किसी चीज़ के गिरने की आवाज़ सुनाई दी। उसने टॉर्च नीचे की। बूढ़े आदमी का चश्मा टूटा हुआ पड़ा था।

आरव का गला सूख गया।

उसने टॉर्च की रोशनी आगे बढ़ाई। किताबों की आख़िरी अलमारी के पीछे एक छोटा-सा कमरा था। दरवाज़ा आधा खुला हुआ था।

वह धीरे-धीरे अंदर गया।

कमरे के बीचों-बीच बूढ़ा आदमी कुर्सी पर बैठा था। उसकी आँखें खुली थीं, लेकिन उनमें कोई हरकत नहीं थी। उसके चेहरे पर ऐसा डर था, जैसे मरने से पहले उसने कुछ ऐसा देखा हो जिसे शब्दों में नहीं बताया जा सकता।

आरव ने उसका हाथ छुआ।

वह ठंडा पड़ चुका था।

"नहीं..." उसके मुँह से बस इतना ही निकला।

उसी समय बाहर पुलिस की गाड़ी का सायरन सुनाई दिया। कुछ ही पल बाद इंस्पेक्टर विक्रम दो सिपाहियों के साथ अंदर आया।

उसने कमरे का एक चक्कर लगाया, फिर सीधा आरव की तरफ़ देखा।

"जहाँ भी लाश मिलती है... वहाँ तुम पहले से मौजूद होते हो।"

आरव चुप रहा।

"अब बताओ, सच क्या है?"

"मैंने इन्हें नहीं मारा।"

"फिर किसने मारा?"

"मुझे नहीं पता।"

विक्रम ने गहरी साँस ली। "तुम्हें बहुत कुछ पता है, लेकिन तुम बता नहीं रहे।"

तभी एक सिपाही दौड़ता हुआ आया।

"सर, पीछे वाली खिड़की खुली हुई है। लगता है कोई भागा है।"

विक्रम तुरंत बाहर निकल गया।

आरव ने मौका देखकर मेज़ पर रखा एक पुराना रजिस्टर उठा लिया। उसे याद था कि बूढ़ा आदमी उसी रजिस्टर में कुछ ढूँढ़ रहा था।

उसने जल्दी से उसे अपने बैग में रख लिया।

कुछ देर बाद पुलिस ने पूरी लाइब्रेरी की तलाशी ली, लेकिन कोई नहीं मिला।

विक्रम बाहर खड़ा सोच रहा था। तभी उसे अपनी जेब में रखा वह छोटा कागज़ याद आया, जो उसने पिछली रात आरव के घर से उठाया था।

उसने कागज़ खोला।

उस पर सिर्फ़ एक लाइन लिखी थी—

**"पाँचवाँ ज़िंदा है।"**

विक्रम कुछ समझ नहीं पाया।

इधर आरव घर पहुँच चुका था। उसने दरवाज़ा बंद किया और बैग से पुराना रजिस्टर निकाला।

रजिस्टर के पहले पन्ने पर लिखा था—

**"डायरी रखने वालों का हिसाब।"**

उसने अगला पन्ना खोला।

पहला नाम—

मोहन वर्मा **—** मृत्यु।

दूसरा नाम—

रघुवीर **—** मृत्यु।

तीसरा—

सुरेश **—** मृत्यु।

चौथा—

दिलीप **—** मृत्यु।

आरव ने जल्दी से आख़िरी नाम पढ़ा।

देवेन्द्र **—** जीवित।

नाम के नीचे एक पता भी लिखा था।

रामगढ़ गाँव।

आरव ने पहली बार महसूस किया कि वह सच के बहुत करीब पहुँच चुका है।

लेकिन उसी समय उसकी मेज़ पर रखी काली डायरी अपने-आप खुल गई।

पन्ने पर धीरे-धीरे लाल अक्षर उभरने लगे।

**"रामगढ़ मत जाना..."**

कुछ सेकंड बाद एक और लाइन लिखी गई—

**"अगर गए... तो अगली लाश तुम्हारी होगी।"**

# अध्याय 7 — रामगढ़ का आख़िरी आदमी

पूरी रात आरव सो नहीं पाया। मेज़ पर रखी डायरी खुली हुई थी। उस पर लाल अक्षरों में अब भी वही चेतावनी लिखी थी—**"रामगढ़ मत जाना..."** वह बार-बार उस लाइन को पढ़ता और फिर रजिस्टर में लिखे पते को देखता। अगर डायरी उसे वहाँ जाने से रोक रही थी, तो इसका मतलब साफ़ था—रामगढ़ में ही वह सच छिपा था जिसकी तलाश वह कई दिनों से कर रहा था।

सुबह होते ही उसने बैग में दोनों डायरियाँ, पुरानी तस्वीर और रजिस्टर रखा। उसने किसी को कुछ नहीं बताया। कार स्टार्ट की और रामगढ़ की तरफ़ निकल पड़ा। शहर पीछे छूटता गया। पक्की सड़क धीरे-धीरे कच्चे रास्ते में बदल गई। दोनों तरफ़ खेत थे। कहीं-कहीं पुराने बरगद के पेड़ खड़े थे। रास्ता सुनसान होता जा रहा था।

करीब दो घंटे बाद उसने देखा कि पीछे एक सफ़ेद बोलेरो लगातार उसकी कार के पीछे चल रही है। पहले उसे लगा कि यह भी उसी रास्ते जा रही होगी, लेकिन जब उसने तीन बार रास्ता बदला और बोलेरो हर बार उसके पीछे रही, तो उसका शक यक़ीन में बदल गया।

उसने अचानक कार की रफ़्तार बढ़ा दी।

पीछे वाली बोलेरो भी तेज़ हो गई।

आरव ने अगले मोड़ पर अचानक ब्रेक लगाया और कार एक छोटी चाय की दुकान के सामने रोक दी। उसने शीशे से पीछे देखा।

बोलेरो बिना रुके आगे निकल गई।

उसने गाड़ी का नंबर देखने की कोशिश की, लेकिन नंबर प्लेट पर मोटी मिट्टी लगी थी। कुछ भी साफ़ नहीं दिखा।

चाय वाले ने मुस्कुराते हुए पूछा, "साहब, रामगढ़ जा रहे हो क्या?"

आरव ने हैरानी से उसकी तरफ़ देखा। "हाँ... लेकिन तुम्हें कैसे पता?"

बूढ़ा चायवाला कुछ पल चुप रहा। फिर बोला, "जो भी उस गाँव का रास्ता पूछता है... वापस बहुत कम लोग आते हैं।"

आरव हल्का-सा मुस्कुराया। "लोग कहानियाँ बना लेते हैं।"

बूढ़े ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा, "बेटा... कुछ कहानियाँ सच होती हैं।"

आरव बिना जवाब दिए वहाँ से निकल गया।

करीब आधे घंटे बाद एक टूटा हुआ बोर्ड दिखाई दिया।

**"रामगढ़ गाँव में आपका स्वागत है।"**

बोर्ड आधा टूटा हुआ था। नीचे काले रंग से किसी ने लिखा था—

**"वापस लौट जाओ।"**

गाँव में अजीब सन्नाटा था। दोपहर होने के बाद भी सड़कें खाली थीं। ज़्यादातर घर बंद पड़े थे। कुछ खिड़कियों से लोग उसे देख रहे थे, लेकिन जैसे ही उसकी नज़र उनकी तरफ़ जाती, वे तुरंत परदे बंद कर लेते।

आरव ने एक बुज़ुर्ग से पूछा, "देवेन्द्र जी का घर कहाँ है?"

बुज़ुर्ग का चेहरा सफ़ेद पड़ गया।

"कौन देवेन्द्र?"

"यहीं रहते हैं।"

बुज़ुर्ग ने बिना कुछ बोले काँपते हाथ से गाँव के आख़िरी छोर की तरफ़ इशारा कर दिया।

वहाँ एक पुरानी हवेली थी।

हवेली की दीवारों पर दरारें थीं। बड़ा लकड़ी का दरवाज़ा आधा खुला था। ऐसा लग रहा था जैसे कई सालों से किसी ने उसकी मरम्मत नहीं की हो।

आरव धीरे-धीरे अंदर गया।

आँगन में सूखे पत्ते बिखरे पड़े थे। बीच में एक पुराना कुआँ था। चारों तरफ़ गहरा सन्नाटा था।

"कोई है?" उसने आवाज़ लगाई।

कुछ देर तक कोई जवाब नहीं आया।

फिर ऊपर की मंज़िल से किसी के चलने की आवाज़ आई।

**ठक... ठक... ठक...**

आरव ने सीढ़ियाँ चढ़नी शुरू कीं।

ऊपर पहुँचकर उसने देखा कि एक बूढ़ा आदमी खिड़की के पास खड़ा बाहर देख रहा था।

"देवेन्द्र जी?"

बूढ़ा धीरे-धीरे उसकी तरफ़ मुड़ा।

उसकी आँखों में डर नहीं था।

मानो वह आरव का इंतज़ार कर रहा हो।

"तुम मोहन के बेटे हो।"

आरव चौंक गया।

"आप मेरे पापा को जानते थे?"

देवेन्द्र हल्का-सा हँसा।

"जानता था?"

उसने मेज़ पर रखी पुरानी तस्वीर उठाई।

"हम पाँच नहीं थे..."

आरव ने हैरानी से पूछा, "मतलब?"

देवेन्द्र ने तस्वीर की तरफ़ उँगली दिखाई।

"यह तस्वीर झूठ बोलती है।"

आरव ने गौर से देखा।

इस बार उसकी नज़र तस्वीर के पीछे खड़े एक धुँधले साए पर गई।

पहले उसे लगा था कि वह पेड़ की परछाई है।

लेकिन अब साफ़ दिख रहा था।

तस्वीर में पाँच नहीं...

छह लोग थे।

देवेन्द्र ने धीमी आवाज़ में कहा,

"जिसे तुम खोज रहे हो..."

"...उसका चेहरा इस तस्वीर में कभी दिखाई नहीं देता।"

आरव कुछ समझ पाता, उससे पहले हवेली की सारी खिड़कियाँ अपने-आप बंद हो गईं।

धड़ाम...!

पूरा कमरा अँधेरे में डूब गया।

उसी अँधेरे में किसी ने बहुत धीमी आवाज़ में कहा—

"अब बहुत देर हो चुकी है..."

# अध्याय 8 — पच्चीस साल पुराना सच

हवेली के कमरे में कुछ पल तक पूरा अँधेरा छाया रहा। फिर अचानक एक पुराना बल्ब अपने-आप जल उठा। उसकी पीली रोशनी में देवेन्द्र का चेहरा साफ़ दिखाई देने लगा। वह कुर्सी पर बैठ गया और सामने वाली कुर्सी की तरफ़ इशारा करते हुए बोला, "बैठ जाओ। अब जो सुनोगे, उसके बाद तुम्हारी ज़िंदगी पहले जैसी नहीं रहेगी।"

आरव चुपचाप बैठ गया। उसके हाथ अब भी काँप रहे थे। उसने जेब से पुरानी तस्वीर निकाली और मेज़ पर रख दी। देवेन्द्र ने तस्वीर पर हाथ फेरा, जैसे वह किसी पुराने दोस्त को छू रहा हो।

"आज से पच्चीस साल पहले," उसने धीरे-धीरे कहना शुरू किया, "हम पाँच दोस्त थे। तुम्हारे पिता मोहन, मैं, रघुवीर, सुरेश और दिलीप। हम सब शहर से यहाँ घूमने आए थे। उस समय इस हवेली में कोई नहीं रहता था। गाँव वाले कहते थे कि यहाँ मत जाना, लेकिन हम जवान थे। हमें किसी बात का डर नहीं था।"

देवेन्द्र कुछ पल के लिए चुप हो गया। उसकी आँखें कहीं दूर अतीत में खो गईं।

"हवेली के नीचे एक तहखाना था। हमें वहाँ एक लकड़ी का बड़ा संदूक मिला। जब हमने उसे खोला, तो अंदर पाँच काली डायरियाँ रखी थीं। हर डायरी पर अलग-अलग नाम लिखा था। लेकिन उनमें से एक डायरी ऐसी थी, जिस पर कोई नाम नहीं था।"

आरव ध्यान से उसकी बात सुन रहा था।

"हमने सोचा, यह कोई मज़ाक होगा। हम सबने एक-एक डायरी उठा ली। तुम्हारे पिता ने हमें बहुत रोका। उन्होंने कहा कि इन चीज़ों को यहीं छोड़ देते हैं, लेकिन हम नहीं माने।"

"फिर क्या हुआ?" आरव ने पूछा।

देवेन्द्र ने गहरी साँस ली।

"पहले कुछ दिन सब ठीक रहा। फिर डायरियाँ भविष्य बताने लगीं। शुरू में हमें मज़ा आया। शेयर बाज़ार में पैसा कमाया, ज़मीन खरीदी, हर छोटी-बड़ी बात पहले से पता चलने लगी। हमें लगा भगवान ने हमें कोई वरदान दिया है।"

उसकी आवाज़ अचानक भारी हो गई।

"लेकिन धीरे-धीरे हर भविष्यवाणी की एक कीमत निकलने लगी।"

"कीमत?"

"हाँ। अगर डायरी तुम्हें किसी हादसे के बारे में पहले बता देती थी और तुम उसे रोकने की कोशिश करते थे... तो हादसा किसी और के साथ हो जाता था। अगर किसी मौत को बचाते... तो कोई दूसरा मर जाता।"

आरव के चेहरे का रंग उड़ गया।

उसे पहली बार समझ आया कि डायरी सिर्फ भविष्य नहीं बताती, बल्कि लोगों की किस्मत से खेलती है।

देवेन्द्र ने मेज़ की दराज़ खोली और अंदर से एक पुराना अख़बार निकाला। अख़बार पीला पड़ चुका था।

उसने एक खबर पर उँगली रखी।

**"**स्कूल बस हादसा**, 18** बच्चों की मौत।**"**

"यह हादसा डायरी ने हमें तीन दिन पहले बता दिया था। हम चाहते तो बस रोक सकते थे।"

"तो आपने रोकी क्यों नहीं?"

देवेन्द्र की आँखें झुक गईं।

"क्योंकि डायरी में लिखा था... अगर बस बच गई, तो हमारे परिवार का कोई मर जाएगा।"

कमरे में सन्नाटा छा गया।

आरव ने धीरे से पूछा, "फिर आपने क्या किया?"

देवेन्द्र की आँखों से आँसू निकल आए।

"हमने कुछ नहीं किया।"

आरव कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

"मतलब... आप लोग जानते थे कि बच्चे मरने वाले हैं, फिर भी चुप रहे?"

देवेन्द्र ने कोई जवाब नहीं दिया।

उसकी चुप्पी ही जवाब थी।

आरव को पहली बार अपने पिता से नफ़रत महसूस हुई।

"मेरे पापा भी इसमें शामिल थे?"

देवेन्द्र ने तुरंत सिर हिलाया।

"नहीं।"

"मतलब?"

"तुम्हारे पिता आख़िरी समय तक बस रोकना चाहते थे। हम चारों ने उन्हें रोक दिया। उसी दिन उन्होंने हमसे रिश्ता तोड़ दिया।"

आरव की आँखें भर आईं।

उसी समय हवेली के बाहर गाड़ियों के रुकने की आवाज़ आई।

देवेन्द्र खिड़की की तरफ़ भागा।

बाहर तीन काली गाड़ियाँ खड़ी थीं।

उनमें से छह आदमी नीचे उतरे।

सबने काले कपड़े पहन रखे थे।

एक आदमी ने ऊपर खिड़की की तरफ़ देखा और मुस्कुराया।

"वे लोग आ गए..." देवेन्द्र की आवाज़ काँप रही थी।

"कौन लोग?"

"जिन्होंने डायरियाँ बनाई थीं।"

अगले ही पल हवेली का मुख्य दरवाज़ा ज़ोर से टूटा।

धड़ाम...!

सीढ़ियों पर तेज़ कदमों की आवाज़ गूँजने लगी।

देवेन्द्र ने जल्दी से मेज़ के नीचे से एक छोटी लोहे की चाबी निकाली और आरव के हाथ में रख दी।

"पीछे वाले कमरे में भागो। वहाँ तहखाने का दरवाज़ा है।"

"लेकिन आप?"

देवेन्द्र हल्का-सा मुस्कुराया।

"अब मेरी बारी है।"

आरव कुछ कह पाता, उससे पहले देवेन्द्र ने उसे पीछे वाले कमरे की तरफ़ धक्का दे दिया।

जैसे ही आरव अंदर पहुँचा, उसने पीछे मुड़कर देखा।

दरवाज़ा खुल चुका था।

काले कपड़ों में खड़ा एक आदमी कमरे के बीचों-बीच आ चुका था।

उसके चेहरे पर काला नकाब था।

लेकिन उसकी दाहिनी कलाई पर बना एक निशान साफ़ दिखाई दे रहा था।

वही निशान...

जो आरव ने बचपन में अपने पिता के हाथ पर देखा था।

# अध्याय 9 — छठी डायरी

आरव ने पीछे वाले कमरे का दरवाज़ा बंद किया और काँपते हाथों से देवेन्द्र दी हुई लोहे की चाबी ताले में लगाई। ताला कई सालों से बंद था। जैसे ही उसने चाबी घुमाई, दरवाज़ा चरमराते हुए खुल गया। नीचे जाने वाली पत्थर की सीढ़ियाँ दिखाई दीं। वहाँ से ठंडी हवा आ रही थी और मिट्टी की तेज़ गंध पूरे कमरे में फैल गई।

ऊपर से लोगों के दौड़ने और सामान टूटने की आवाज़ें आ रही थीं। देवेन्द्र की चीख भी सुनाई दी, लेकिन आरव जानता था कि अब वापस जाना मौत को बुलाना होगा। उसने मोबाइल की टॉर्च जलाई और धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा।

तहखाना बहुत बड़ा था। दीवारों पर पुराने दीये लगे थे। बीच में पत्थर की एक गोल मेज़ थी। उस मेज़ पर छह जगह बनी हुई थीं। पाँच जगह खाली थीं, लेकिन छठी जगह पर अब भी एक काली डायरी रखी थी।

यह डायरी बाकी डायरियों से अलग थी।

इस पर कोई नाम नहीं लिखा था।

आरव ने जैसे ही उसे छुआ, उसका मोबाइल बंद हो गया। पूरे तहखाने में गहरा सन्नाटा फैल गया। उसने धीरे से डायरी खोली।

पहले पन्ने पर सिर्फ़ एक वाक्य लिखा था—

**"जो सच जान लेगा, वही आख़िरी फ़ैसला करेगा।"**

उसने अगला पन्ना खोला।

इस बार वहाँ कोई भविष्यवाणी नहीं थी।

वहाँ पूरी कहानी लिखी थी।

पच्चीस साल पहले पाँच दोस्तों ने लालच में डायरियाँ उठा ली थीं। हर बार जब उन्होंने अपने फ़ायदे के लिए भविष्य बदला, डायरी और ताकतवर होती गई। लेकिन एक नियम ऐसा था जिसे कोई नहीं जानता था।

अगर सभी डायरियाँ एक साथ वापस रख दी जाएँ, तो यह खेल हमेशा के लिए खत्म हो जाएगा।

आरव की आँखें फैल गईं।

मतलब अब तक जितनी मौतें हुईं, उन्हें रोकने का एक रास्ता था।

उसी समय पीछे से कदमों की आवाज़ आई।

आरव ने मुड़कर देखा।

नकाबपोश आदमी उसके सामने खड़ा था।

उसने धीरे-धीरे अपना नकाब उतारा।

आरव की साँस रुक गई।

वह कोई अजनबी नहीं था।

वह इंस्पेक्टर विक्रम था।

विक्रम ने शांत आवाज़ में कहा, "मुझे पता था कि तुम यहीं आओगे।"

"तुम...?"

"हाँ। पिछले दस साल से मैं इन डायरियों की तलाश कर रहा हूँ। मेरे पिता भी उन पाँच दोस्तों में से एक थे। उन्होंने मुझे मरने से पहले सब सच बता दिया था।"

आरव ने पहली बार समझा कि विक्रम उससे सच क्यों छिपा रहा था।

"तो तुम मेरी मदद क्यों नहीं कर रहे थे?"

विक्रम ने गहरी साँस ली।

"क्योंकि मुझे पहले यक़ीन करना था कि तुम अपने पिता जैसे हो... या बाकी चार लोगों जैसे।"

उसी समय ऊपर से गोली चलने की आवाज़ आई।

देवेन्द्र की आख़िरी चीख पूरे तहखाने में गूँज उठी।

दोनों कुछ पल चुप रहे।

विक्रम ने धीरे से कहा, "अब देवेन्द्र भी नहीं रहा।"

आरव ने आँखें बंद कर लीं।

अब इस खेल में सिर्फ़ दो लोग बचे थे।

वह...

और विक्रम।

दोनों ने एक साथ मेज़ की तरफ़ देखा।

छह जगहों में से पाँच अब भी खाली थीं।

अगर सभी डायरियाँ वापस नहीं रखी गईं...

तो यह खेल कभी खत्म नहीं होगा।

# अध्याय 10 — आख़िरी शिकार

तहखाने में कुछ पल के लिए ऐसा सन्नाटा छा गया कि दोनों को अपनी साँसों की आवाज़ भी साफ़ सुनाई दे रही थी। आरव और इंस्पेक्टर विक्रम पत्थर की मेज़ के सामने खड़े थे। मेज़ पर रखी बिना नाम वाली छठी डायरी खुली हुई थी। उसके पन्नों पर लाल रंग के अक्षर धीरे-धीरे अपने-आप उभर रहे थे।

**"वे नीचे आ रहे हैं।"**

दोनों ने एक साथ सीढ़ियों की तरफ़ देखा।

कुछ सेकंड बाद भारी कदमों की आवाज़ सुनाई देने लगी।

**ठक... ठक... ठक...**

विक्रम ने अपनी पिस्तौल निकाली और धीमी आवाज़ में कहा, "अब छिपने का समय खत्म हो गया है। जो भी होगा, यहीं होगा।"

आरव ने दोनों डायरियाँ अपने बैग में रख लीं। उसके मन में सिर्फ़ एक बात घूम रही थी। अगर सच में सभी डायरियों को एक साथ वापस रखना ही इस खेल का अंत है, तो बाकी डायरियाँ हर हाल में ढूँढ़नी होंगी।

सीढ़ियों से पाँच आदमी नीचे उतरे। सभी ने काले कपड़े पहने थे। सबसे आगे खड़ा आदमी उम्र में सबसे बड़ा लग रहा था। उसके सफ़ेद बाल थे, लेकिन चेहरे पर डर नहीं था। वह सीधे पत्थर की मेज़ के पास आया और मुस्कुराने लगा।

"पच्चीस साल बाद कोई फिर यहाँ तक पहुँच ही गया।"

विक्रम ने पिस्तौल उसकी तरफ़ तान दी।

"एक कदम भी आगे बढ़े तो गोली मार दूँगा।"

वह आदमी हँसा।

"गोली मुझे मार सकती है... लेकिन डायरी को नहीं।"

उसने अपनी जेब से एक काली डायरी निकाली और मेज़ पर रख दी।

अब मेज़ पर दो डायरियाँ थीं।

आरव ने पहली बार उस आदमी को ध्यान से देखा।

"तुम कौन हो?"

उसने शांत आवाज़ में जवाब दिया।

"मेरा नाम हरिनाथ है। पच्चीस साल पहले इस हवेली का रखवाला मैं ही था।"

आरव हैरान रह गया।

"मतलब... डायरियाँ तुम्हारी हैं?"

"नहीं। मैं सिर्फ़ इनकी रखवाली करता हूँ।"

"फिर मालिक कौन है?"

हरिनाथ कुछ पल चुप रहा।

"आज तक जिसने भी यह सवाल पूछा... वह ज़िंदा नहीं बचा।"

इतना कहते ही उसके पीछे खड़े एक आदमी ने अचानक गोली चला दी।

धाँय...!

गोली विक्रम के कंधे में लगी।

वह ज़मीन पर गिर पड़ा।

आरव उसकी तरफ़ भागा, लेकिन तभी दो आदमी उसे पकड़ने दौड़े। उसने पूरी ताक़त से एक को धक्का दिया। दूसरा उस पर टूट पड़ा। तहखाने में हाथापाई शुरू हो गई। पत्थर की मेज़ हिल गई और उस पर रखी डायरियाँ नीचे गिर पड़ीं।

अचानक पूरी ज़मीन काँपने लगी।

दीवारों से मिट्टी गिरने लगी।

हरिनाथ ज़ोर से चिल्लाया, "डायरियों को छुओ मत!"

लेकिन तब तक देर हो चुकी थी।

छठी डायरी अपने-आप खुल गई।

उसके पन्नों से तेज़ हवा निकलने लगी। तहखाने में रखे पुराने दीये अपने-आप जल उठे। सभी लोग घबरा गए।

हरिनाथ पहली बार डर गया।

"नहीं... यह नहीं होना चाहिए था।"

आरव ने ज़मीन पर पड़ी डायरी उठाई। जैसे ही उसने उसे हाथ में लिया, उसके सामने कुछ तस्वीरें चमकने लगीं।

उसे अपने पिता दिखाई दिए।

वह इसी तहखाने में खड़े थे।

उनके सामने हरिनाथ था।

दोनों के बीच ज़ोरदार बहस हो रही थी।

मोहन चिल्ला रहे थे—

"मैं यह खेल हमेशा के लिए खत्म कर दूँगा।"

हरिनाथ हँस रहा था।

"तुम नहीं कर पाओगे। एक दिन तुम्हारा बेटा खुद यहाँ लौटेगा।"

दृश्य अचानक गायब हो गया।

आरव की आँखें खुलीं तो उसने देखा कि हरिनाथ उसे घूर रहा था।

उसके चेहरे पर अब मुस्कान नहीं थी।

"तो मोहन ने सचमुच सब कुछ तुम्हारे लिए छोड़ा था..."

आरव ने गुस्से से कहा, "मेरे पिता ने क्या किया था?"

हरिनाथ ने गहरी साँस ली।

"उन्होंने पाँच डायरियाँ मुझसे छीन ली थीं। लेकिन छठी डायरी... कभी नहीं ले जा सके।"

तभी घायल विक्रम ने ज़मीन से उठते हुए कहा,

"आरव... भागो..."

"क्यों?"

"क्योंकि..."

विक्रम ने काँपते हाथ से सामने इशारा किया।

सीढ़ियों के ऊपर...

तीन और नकाबपोश आदमी खड़े थे।

उनके हाथों में भी काली डायरियाँ थीं।

अब तक आरव समझ चुका था।

बाकी डायरियाँ कभी खोई ही नहीं थीं।

वे हमेशा...

हरिनाथ के लोगों के पास थीं।

# अध्याय 11 — पिता का आख़िरी सच

तहखाने की दीवारें लगातार हिल रही थीं। ऊपर से मिट्टी और छोटे-छोटे पत्थर गिर रहे थे। विक्रम घायल होकर एक पत्थर का सहारा लेकर बैठा था। उसके कंधे से खून बह रहा था, लेकिन उसकी नज़र अब भी हरिनाथ पर टिकी हुई थी। दूसरी तरफ़ हरिनाथ के लोग धीरे-धीरे आरव को घेर रहे थे।

हरिनाथ ने हाथ उठाकर अपने आदमियों को रुकने का इशारा किया।

"अब लड़ाई की ज़रूरत नहीं है। सच जानने के बाद आदमी खुद टूट जाता है।"

वह धीरे-धीरे पत्थर की मेज़ के पास गया। उसने एक पुराना लकड़ी का बक्सा खोला। उसके अंदर कई पुराने कागज़, कुछ तस्वीरें और एक वीडियो कैमरा रखा था।

उसने कैमरा उठाकर आरव की तरफ़ बढ़ा दिया।

"देख लो... तुम्हारे पिता की आख़िरी रिकॉर्डिंग।"

आरव ने काँपते हाथों से कैमरा चालू किया।

स्क्रीन पर उसके पिता दिखाई दिए।

उनका चेहरा थका हुआ था, लेकिन आँखों में डर नहीं था।

उन्होंने कैमरे की तरफ़ देखते हुए कहा,

"अगर यह वीडियो मेरा बेटा देख रहा है... तो इसका मतलब मैं ज़िंदा नहीं हूँ।"

आरव की आँखें भर आईं।

मोहन ने आगे कहा,

"बेटा... मैंने तुमसे बहुत बड़ा सच छिपाया। मैं चाहता था कि तुम्हारी ज़िंदगी इस खेल से दूर रहे। लेकिन लगता है, मैं हार गया।"

कुछ पल के लिए उन्होंने सिर झुका लिया।

"मैंने कोई गुनाह नहीं किया था... लेकिन एक गुनाह होने दिया। उस दिन स्कूल बस का हादसा रोक सकता था, मगर अकेला था। मेरे चार दोस्त लालच में अंधे हो चुके थे। उसी दिन मैंने तय कर लिया था कि एक दिन इन डायरियों को हमेशा के लिए खत्म कर दूँगा।"

वीडियो में मोहन ने जेब से वही काली डायरी निकाली।

"मैं पाँच डायरियाँ छिपाने में कामयाब हो गया था। लेकिन छठी डायरी हरिनाथ के पास रह गई। जब तक छह की छह डायरियाँ एक साथ वापस नहीं रखी जाएँगी, यह खेल खत्म नहीं होगा।"

वीडियो बंद हो गया।

पूरा तहखाना फिर से शांत हो गया।

आरव की आँखों से आँसू बह रहे थे।

उसे पहली बार अपने पिता पर गर्व महसूस हुआ।

हरिनाथ ने ताली बजाई।

"बहुत अच्छे इंसान थे तुम्हारे पिता... लेकिन समझदार नहीं थे।"

आरव ने गुस्से में उसकी तरफ़ देखा।

"उन्होंने कम से कम लोगों की जान बचाने की कोशिश तो की।"

हरिनाथ मुस्कुराया।

"और क्या मिला उन्हें? मौत।"

इतना कहते ही उसने अपने आदमियों को इशारा किया।

तीनों लोगों ने अपने बैग से तीन और काली डायरियाँ निकालीं।

अब पत्थर की मेज़ पर कुल पाँच डायरियाँ रखी थीं।

हरिनाथ ने आरव की तरफ़ देखा।

"छठी डायरी तुम्हारे हाथ में है।"

"अगर मैं इसे तुम्हें न दूँ तो?"

"फिर यह खेल कभी खत्म नहीं होगा। हर कुछ साल बाद नए लोग मरेंगे।"

आरव चुप हो गया।

उसी समय घायल विक्रम धीरे-धीरे खड़ा हुआ।

उसने जेब से वही छोटा कागज़ निकाला, जो उसे आरव के घर से मिला था।

उसने वह कागज़ मेज़ पर रख दिया।

कागज़ पर लिखे शब्द अचानक चमकने लगे।

धीरे-धीरे उनके नीचे नई लाइन उभर आई—

**"अंतिम नियम — जो व्यक्ति अपनी इच्छा से छह डायरियाँ वापस रखेगा, वही आख़िरी रखवाला बनेगा।"**

आरव ने हैरानी से वह लाइन पढ़ी।

"रखवाला?"

हरिनाथ मुस्कुराया।

"हाँ।"

"मतलब खेल खत्म नहीं होगा?"

हरिनाथ ने सिर हिलाया।

"खेल कभी खत्म नहीं होता। सिर्फ़ रखवाले बदलते हैं।"

यह सुनकर आरव का दिल बैठ गया।

मतलब उसके पिता भी पूरी सच्चाई नहीं जानते थे।

अगर वह डायरियाँ वापस रखता है...

तो वह हमेशा के लिए इस तहखाने का कैदी बन जाएगा।

विक्रम ने धीरे से कहा,

"कोई दूसरा रास्ता ज़रूर होगा।"

तभी आरव की नज़र छठी डायरी के आख़िरी पन्ने पर गई।

कुछ नए शब्द उभर रहे थे।

उसने जल्दी से पढ़ा।

**"हर नियम का एक अपवाद होता है।"**

उसके नीचे लिखा था—

**"रखवाले को नहीं... लालच को खत्म करो।"**

आरव ने डायरी बंद कर दी।

उसकी आँखों में पहली बार डर नहीं...

एक योजना थी।

# अध्याय 12 — अंतिम नियम

तहखाने की हवा अचानक भारी हो गई। पत्थर की मेज़ पर पाँच डायरियाँ रखी थीं और छठी डायरी आरव के हाथ में थी। सबकी नज़र उसी पर थी। हरिनाथ शांत खड़ा था, जैसे उसे पूरा भरोसा हो कि आखिर में जीत उसी की होगी। दूसरी तरफ़ इंस्पेक्टर विक्रम घायल होने के बावजूद दीवार का सहारा लेकर खड़ा था। उसके चेहरे पर दर्द था, लेकिन आँखों में उम्मीद बाकी थी।

हरिनाथ ने हाथ आगे बढ़ाया।

"छठी डायरी मुझे दे दो। अब यह खेल खत्म करने का समय आ गया है।"

आरव ने कोई जवाब नहीं दिया।

उसने छठी डायरी का आख़िरी पन्ना एक बार फिर खोला। उस पर लिखे शब्द अब बदल चुके थे।

**"जिसे लालच नहीं होगा, वही नियम बदल सकता है।"**

आरव हल्का-सा मुस्कुराया।

उसे समझ आ गया था कि डायरी क्या कहना चाहती है।

उसने धीरे-धीरे छठी डायरी पत्थर की मेज़ पर रख दी।

जैसे ही छह की छह डायरियाँ अपनी जगह पहुँचीं, पूरा तहखाना ज़ोर से काँप उठा। दीवारों पर बनी पुरानी दरारें और चौड़ी हो गईं। छत से मिट्टी गिरने लगी। मेज़ के बीच में लाल रंग की रोशनी फैल गई।

हरिनाथ की आँखों में चमक आ गई।

"देखा... मैंने कहा था न, अब नया रखवाला चुना जाएगा।"

लेकिन अगले ही पल कुछ ऐसा हुआ जिसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी।

छहों डायरियाँ अपने-आप खुल गईं।

उनके पन्ने तेज़ी से पलटने लगे।

फिर एक-एक करके हर पन्ने पर लिखे शब्द गायब होने लगे।

हरिनाथ घबरा गया।

"नहीं... यह नहीं हो सकता।"

आरव ने शांत आवाज़ में कहा,

"हो सकता है। क्योंकि तुमने पूरी बात कभी पढ़ी ही नहीं।"

हरिनाथ ने उसकी तरफ़ देखा।

आरव बोला,

"तुम हमेशा डायरी का इस्तेमाल ताकत के लिए करते रहे। तुमने हर नियम पढ़ा, लेकिन उसका मतलब कभी नहीं समझा।"

उसने आख़िरी पन्ना सबके सामने खोल दिया।

वहाँ साफ़ लिखा था—

**"**जब छहों डायरियाँ बिना किसी लालच के वापस रखी जाएँगी**,** तब खेल खत्म हो जाएगा। नया रखवाला नहीं बनेगा।**"**

हरिनाथ का चेहरा उतर गया।

"झूठ..."

"नहीं," आरव बोला, "सच यही है।"

हरिनाथ गुस्से से चिल्लाया और मेज़ की तरफ़ दौड़ा। उसने एक डायरी उठाने की कोशिश की।

जैसे ही उसका हाथ डायरी को छुआ, पूरी डायरी राख बन गई।

फिर दूसरी...

फिर तीसरी...

कुछ ही सेकंड में छहों डायरियाँ जलने लगीं।

उनसे आग नहीं निकल रही थी।

वे धीरे-धीरे धूल में बदल रही थीं।

तहखाने की दीवारों पर बने पुराने निशान भी मिटने लगे।

हरिनाथ घुटनों के बल बैठ गया।

उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े।

"पच्चीस साल..."

"मैंने पच्चीस साल इन्हें बचाने में लगा दिए..."

आरव उसके पास गया।

"तुम डायरियों के नहीं... अपने लालच के रखवाले थे।"

उसी समय तहखाने की छत का बड़ा हिस्सा टूटकर नीचे गिरा।

विक्रम ज़ोर से चिल्लाया,

"आरव... बाहर भागो!"

तीनों लोग सीढ़ियों की तरफ़ दौड़े।

हरिनाथ वहीं बैठा रहा।

उसने एक बार आख़िरी बार धूल बनती डायरियों को देखा और आँखें बंद कर लीं।

कुछ ही पल बाद पूरा तहखाना भरभराकर गिर गया।

आरव और विक्रम किसी तरह बाहर निकल आए।

दोनों ने पीछे मुड़कर देखा।

पुरानी हवेली धीरे-धीरे ज़मीन में धँस रही थी।

कुछ ही मिनटों में वहाँ सिर्फ़ मिट्टी और पत्थरों का ढेर बचा।

आरव ने गहरी साँस ली।

उसे लगा...

सब खत्म हो गया।

# अध्याय 13 — आख़िरी सच

हवेली ढहे हुए आज पूरे छह महीने बीत चुके थे।

रामगढ़ अब पहले जैसा नहीं था। सरकार ने उस जगह को खतरनाक घोषित करके चारों तरफ़ लोहे की बाड़ लगा दी थी। कोई भी वहाँ जाने की हिम्मत नहीं करता था।

आरव की ज़िंदगी भी धीरे-धीरे सामान्य होने लगी थी। उसने अपने पिता का पुराना घर बेचने का फैसला बदल दिया। अब वह उसी घर में रहता था। इंस्पेक्टर विक्रम की चोट भी ठीक हो चुकी थी। दोनों कभी-कभी मिलते, लेकिन उस रात की बातें शायद ही कभी करते।

एक शाम आरव अपने पिता की कब्र पर फूल रखने गया।

कुछ देर चुपचाप खड़ा रहा।

फिर धीरे से बोला, "पापा... आपने जो शुरू किया था, वह मैंने पूरा कर दिया। अब सब खत्म हो गया है।"

तेज़ हवा चली।

पेड़ों के सूखे पत्ते ज़मीन पर बिखर गए।

आरव मुस्कुराया और वापस अपनी कार की तरफ़ चल पड़ा।

उसी समय उसका मोबाइल बजा।

स्क्रीन पर इंस्पेक्टर विक्रम का नाम था।

"हाँ विक्रम?"

दूसरी तरफ़ से घबराई हुई आवाज़ आई।

"तुरंत पुलिस मुख्यालय आओ।"

"क्या हुआ?"

"कुछ ऐसा मिला है... जो तुम्हें देखना चाहिए।"

आरव बिना कुछ पूछे सीधे शहर की तरफ़ निकल पड़ा।

करीब एक घंटे बाद वह पुलिस मुख्यालय पहुँचा।

विक्रम उसे सीधे रिकॉर्ड रूम में ले गया।

वहाँ मेज़ पर एक पुरानी फ़ाइल रखी थी।

फ़ाइल पर लिखा था—

**"रामगढ़ हवेली केस — वर्ष 1976"**

आरव चौंक गया।

"लेकिन... हमने तो सुना था कि यह सब 2001 में शुरू हुआ था।"

विक्रम ने धीरे से फ़ाइल खोली।

"यही तो बात है।"

अंदर पहली तस्वीर रखी थी।

तस्वीर देखकर आरव के हाथ काँप गए।

यह वही तहखाना था।

वही पत्थर की मेज़।

लेकिन उस तस्वीर में उसके पिता नहीं थे।

न देवेन्द्र।

न हरिनाथ।

तस्वीर में पाँच बिल्कुल अलग लोग खड़े थे।

तस्वीर के नीचे तारीख़ लिखी थी—

**12 जून 1976**

आरव ने घबराकर अगला पन्ना पलटा।

उसमें पुलिस की रिपोर्ट थी।

**"रामगढ़ हवेली में पाँच लोगों की रहस्यमय मौत। कारण अज्ञात।"**

उसके बाद एक और पन्ना था।

उस पर हाथ से लिखा गया एक नोट रखा था।

> **"अगर यह फ़ाइल तुम्हारे हाथ में है, तो समझ लो तुम पहले नहीं हो। हम भी यही समझते थे कि हमने खेल खत्म कर दिया है। हम गलत थे।"**

नीचे कोई नाम नहीं था।

सिर्फ़ एक निशान बना था।

वही निशान...

जो हरिनाथ की कलाई पर था।

कमरे में सन्नाटा छा गया।

विक्रम ने धीरे से कहा,

"हमारी कहानी पहली नहीं थी..."

"...और शायद आख़िरी भी नहीं।"

इतने में रिकॉर्ड रूम का दरवाज़ा खुला।

एक कांस्टेबल अंदर आया।

"सर, यह पार्सल अभी-अभी आया है। भेजने वाले का नाम नहीं है।"

उसने एक पुराना लकड़ी का डिब्बा मेज़ पर रख दिया।

आरव और विक्रम ने एक-दूसरे की तरफ़ देखा।

विक्रम ने सावधानी से डिब्बा खोला।

अंदर न कोई डायरी थी...

न कोई हथियार...

सिर्फ़ एक पुराना नक्शा था।

नक्शे पर पूरे भारत में तेरह जगहों पर लाल गोले बने हुए थे।

हर गोले के पास एक नाम लिखा था—

रामगढ़।

देवकुंड।

कालीगढ़।

भैरवपुर।

...और ऐसे ही कुल तेरह नाम।

नक्शे के नीचे सिर्फ़ एक पंक्ति लिखी थी—

"एक खेल खत्म हुआ है।

बारह अभी बाकी हैं।"

आरव ने धीरे-धीरे नक्शा मोड़ा।

उसने पहली बार महसूस किया कि रामगढ़ सिर्फ़ शुरुआत थी।

असल कहानी...

अब शुरू होने वाली थी.

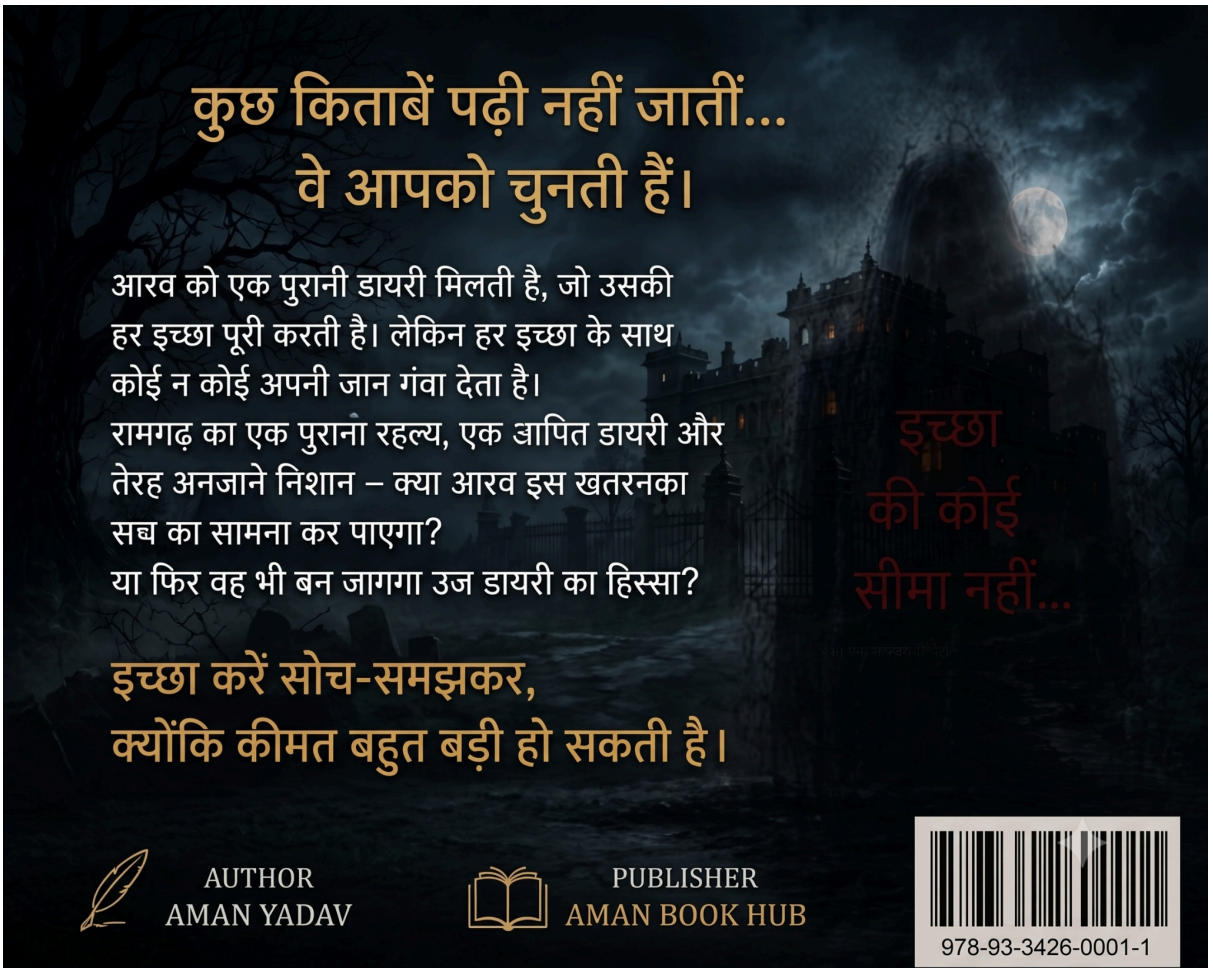
कुछ किताबें पढ़ी नहीं जातीं...
वे आपको चुनती हैं।
आरव को एक पुरानी डायरी मिलती है, जो उसकी
हर इच्छा पूरी करती है। लेकिन हर इच्छा के साथ
कोई न कोई अपनी जान गंवा देता है।
रामगढ़ का एक पुराना रहल्य, एक आपित डायरी और
तेरह अनजाने निशान – क्या आरव इस खतरनका
सब का सामना कर पाएगा?
या फिर वह भी बन जागगा उज डायरी का हिस्सा?
इच्छा
की कोई
सीमा नहीं...
इच्छा करें सोच-समझकर,
क्योंकि कीमत बहुत बड़ी हो सकती है।
AUTHOR
AMAN YADAV
PUBLISHER
AMAN BOOK HUB
978-93-3426-0001-1